17-7-2000

माइक्स की परिभाषा

बापदादा से ड्रामा अनुसार मिलन मनाने का गोल्डन चांस तो मिलता ही है। तो आज भी लण्डन, अमेरिका की सेवा का समाचार ले जाना हुआ। बापदादा तो बच्चों की हिम्मत, उत्साह को देख, सुन खुश होते हैं और दिल ही दिल में बधाईयाँ भी

देते हैं। जाते ही बाबा का नयन मिलन और दिलाराम का दिल का प्यार मिला और बापदादा ने बोला – बच्ची, आज सेवा का समाचार लाई हो ? मैंने कहा बाबा आपको तो हमसे पहले बच्चों के संकल्प पहुँच जाते हैं। हमें तो लिखत बाद में मिलती है। बाबा मुस्कराये और कहा – बच्ची, यह भी आपका विचित्र मीठा पार्ट है जो बहुत गुप्त भाग्य से प्राप्त होता है। ब्रह्मा बाप भागीरथ बना तो तुम्हारा भी भाग्यवान न्यारा और सर्व का प्यारा पार्ट है। यह भी विशेष है। ऐसे कहते ही ऐसे लगा कि बापदादा हमें नज़र से निहाल करते, हमारे भाग्य की लकीरों को देख बहुत हर्षित हो रहे हैं। हम भी लव में लीन थी।

फिर बाबा बोले – जयन्ती बच्ची और गायत्री बच्ची को माइक्स निकालने का बहुत उमंग है और ड्रामा अनुसार अमेरिका लण्डन में कोई-न-कोई निमन्त्रण भी आफर होते रहते हैं। यह प्रोग्राम की आफर भी अच्छी है। दोनों बच्चियाँ और साथी सब स्थान में मिक्स हो सेवा करने में भी अनुभवी हैं। भले मधुबन जैसा वातावरण तो वहाँ नहीं होगा लेकिन हर कदम में बच्चो को सफलता तो मिलती ही है। भल आध्यात्मिकता में सबकी एक जैसी रूचि नहीं होती लेकिन आपकी नॉलेज तो आलराउण्ड है और वर्ल्ड वाइड है। वैल्युज़ भी हैं, एज्युकेशन भी है तो मेडीटेशन की भी है। समस्याओं का हल भी है, टेन्शन फ्री बनाने की भी है और आपकी त्यागी जीवन है। तो जैसा वायुमण्डल में लहर देखो वैसी लहर से उतनी कर सकते हो क्योंकि विशेष आत्माओं का संगठन है और बनी बनाई स्टेज है तो सबको सन्देश देने और भविष्य सम्पर्क बढ़ाने की सेवा तो है ही है, इसलिए जा सकते हैं। बाकी डायलाग रखने का वा बड़ा प्रोग्राम करने का है, यह बच्चों के ऊपर है। जितना समय और हिम्मत से कर सकते हैं, उस अनुसार बनावें। जैसे कहते हैं वैसे ही बड़ा करना है, ऐसी कोई बात नहीं है। सिर्फ सन्देश और सम्पर्क में भी फायदा है। बाकी हिम्मत, समय, सहयोग है तो करो। फिर गायत्री बहन को यादप्यार देते बाबा बोले, बच्ची ने माइक्स की परिभाषा पूछी है तो माइक्स तीन प्रकार के हैं –

ऽ- जो आध्यात्मिकता के महत्व को मानते हैं और सम्पर्क सहयोग में आने वाले हैं। ॅ- आध्यात्मिकता का महत्व अच्छा मानते हैं लेकिन हिम्मत वा समय नहीं है,

समीप और सहयोग में आने का। ३- जो आध्यात्मिकता के महत्व को नहीं जानते लेकिन आपकी जनरल नॉलेज को, जीवन को, सेवा भाव को, त्याग को अच्छा मानते हैं वह औरों को समीप कनेक्शन में ला सकते हैं, सहयोगी बना सकते हैं।

तो तीन प्रकार वालों की ही अपनी-अपनी विशेषता कार्य में आ सकती है। बाकी अब तक जो डायलाग हुए हैं उसकी रिजल्ट अच्छी रही है। बाकी कुछ लगभग नाम या रूप चेंज किया तो भी ठीक है। बाकी वर्तमान समय वर्ल्ड में जो टॉपिक चल रही है वही करने से अच्छा होता है।

उसके बाद बाबा ने अपनी दादियों को खास याद दी, कहा बहुत मुहब्बत से आलराउन्ड सेवा कर रही हैं और सर्व डबल विदेशी बच्चों को यादप्यार और वरदान दिया कि ''सदा निर्विघ्न और फास्ट गति से उड़ते रहो और उड़ाते रहो''। अच्छा।